23-03-2000

हर बात में ब्रह्मा बाप को फ़ालो करने वाले ''ब्रह्माचारी'' बनो

आज आप सबके दिल की स्नेह भरी याद लेकर बाबा के पास वतन में जाना हुआ। तो जब मैं बाबा के पास पहुँची तो देखा कि बाबा बहुत गम्भीर रूप में जैसे किन्हीं विचारों में खोये हुए हैं। वतन में होते भी जैसे बाबा वतन में नहीं हैं। बाबा जैसे हमें देख भी रहे हैं लेकिन देखते भी जैसे कोई बहुत डीप ख्यालों में, संकल्पों में हैं। बाबा के संकल्प तो श्रेष्ठ ही होते हैं तो मैंने बाबा से पूछा, कि बाबा आज आप बहुत डीप सोच में है, क्या सोच रहे हैं? तो बाबा

ने कहा – बाबा का सोच क्या चलेगा? जैसे आप बच्चे कहते हो कि बाबा ही हमारा संसार हैं। तो बाप भी कहते हैं – बच्चे ही मेरा संसार हैं। तो बाप को और क्या सोच चलेगा, बच्चों के प्रति ही चलेगा। ऐसे कहने के बाद जैसे बाबा मुझे देखते भी दूर-दूर कहीं दृष्टि दे रहे हैं। इतने में मैंने क्या देखा कि पाँच दीपक लाइन में बहुत अच्छे चमक रहे थे, उनकी लाइट बहुत सुन्दर थी। तो बाबा ने कहा – मैं क्या सोच रहा हूँ - वह आप इन दीपकों से देखो। मैंने ध्यान से देखा तो हर दीपक के नीचे शब्द लिखे हुए थे।

6)39 बाप के दिल के दीपक

6)39 बाप के श्रेष्ठ संकल्पों के दीपक

6)39 ब्राह्मण कुल के दीपक

6)39 विश्व के दीपक और

6)39 बाप समान बनने वाला दीपक। ऐसे पाँच दीपक बहुत अच्छे जग रहे थे।

फिर बाबा ने कहा कि तुमने समझा कि मैं क्या सोच रहा हूँ? जो भी बच्चे आज मीटिंग में आये हैं विशेष उन बच्चों को देख रहा हूँ कि कौन, कौनसा दीपक है? तो मैंने कहा बाबा ये तो हर एक सब प्रकार के दीपक होंगे। तो बाबा ने कहा – नहीं, इसमें परसेन्टेज है। ये बच्चे तो खास विश्व की सेवा के प्रति निमित्त हैं। यह भी बहुत बड़ा कार्य है। फिर बाबा थोड़ा राज़युक्त मुस्कराये और कहा कि सभी कहते हैं इसमें हमारा भी नाम होना चाहिए। हमारा भी कोई पार्ट होना चाहिए...तो बाबा ने कहा – यह तो अच्छी बात है। तो जैसे इस मीटिंग में या कोई भी ऐसा विशेष कार्य होता है तो हर एक समझता है कि उसमें हमारा पार्ट हो तो अच्छा है। तो बाबा ने कहा कि यह बच्चे जो विशेष कोटों में कोई, कोई में भी कोई की लिस्ट में है क्योंकि

विशेष नाम, आक्युपेशन सहित आये हुए हैं। तो बाबा को इन बच्चों में से एक ग्रुप चाहिए, **जो सिर्फ ब्रह्मचारी नहीं लेकिन ब्रह्माचारी हों।** हर बात में ब्रह्मा बाप को फालो करे। तो बाबा ने कहा – मुझे ऐसा ग्रुप चाहिए - जो ब्रह्माचारी हो, हर बात में ब्रह्मा बाप को फालो करे। जैसे ब्रह्मा बाबा ने सम्पूर्ण बनकर अपना कार्य सम्पन्न किया, किसी को भी नहीं देखा कि ये बच्चा ऐसा है, ये ऐसा है... इसलिए मैं सम्पूर्ण नहीं बन सकता। 'हर पार्ट बजाते हुए सम्पूर्ण बनें, सम्पन्न बने ऐसे मुझे बनना ही है।' ऐसा संकल्प लेने वाला ब्रह्माचारी ग्रुप चाहिए। तो इस ग्रुप में जो बच्चे स्वयं को समझते हैं वह खुद अपनी चिटकी लिखकर दें कि कुछ भी हो जाये लेकिन प्रैक्टिकल लाने में कोई अन्तर नहीं लायेंगे। बच्चों ने ब्रह्माचारी ग्रुप की परिभाषा तो लेटेस्ट मुरलियों में सुनी ही है। तो उन सब धारणाओं को सामने रखते हुए अपना नाम दें कि मैं ब्रह्माचारी ग्रुप में प्रैक्टिकल करने के लिए तैयार हूँ। ऐसे अपनी चिटकी मीटिंग पूरी होने के बाद दादी जी को देकर जायें। फिर बाबा बहुत मीठा मुस्कराये और कहा कि बच्चों की चिटकियां भी बहुत आती हैं, वायदे भी बहुत करते हैं .... बाबा के पास तो वायदों के, प्रतिज्ञाओं के, प्रीत लगाने वालों के.. फाइलों के फाइल हैं। ऐसे प्रीत लगाने वाले तो ९ लाख भी होंगे। लेकिन बाबा चाहते हैं कि यह ग्रुप सिर्फ प्रीत करने वाला नहीं, प्रतिज्ञा करने वाला नहीं, लेकिन – **'प्रीत निभाने वाला, प्रतिज्ञा निभाने वाला हो।'** तो जिसमें ऐसी हिम्मत हो, वह अपना नाम दे। फिर बाबा कोई बहाना नहीं सुनेगा कि ये हुआ इसलिए थोड़ा ये हुआ, अभी बाबा यह सुनने नहीं चाहते हैं। कुछ भी हो लेकिन अपनी हिम्मत रखने वाले हो तो अपना नाम देवें। ऐसे कहते बाबा ने सभी को वतन में इमर्ज कर लिया और एक-एक को मीठी दृष्टि देते मुस्कराते रहे। बाबा के मुस्कराने से हर एक जैसे समझ

रहा हो कि बाबा के पास मेरे लिए कुछ है। बाहर से तो बाबा कुछ नहीं कह रहे थे लेकिन मीठा-मीठा मुस्करा रहे थे।

फिर बाबा ने कहा याद-प्यार तो पद्मा-पद्म, पद्म, पद्म बच्चों के प्रति है ही है। लेकिन अभी बाबा ये 'ब्रह्माचारी ग्रुप' तैयार चाहता है।

फिर बाबा ने सेवा के प्रति कहा कि सेवाओं के प्रति तो मुरली में सुनाया ही है। बच्चों ने सेवा तो बहुत की है लेकिन अभी बाबा चाहते हैं कि कोई संगठन बनाओ, हर देश में ऐसे कोई तैयार करो, जो ग्रुप सेवा के निमित्त बनकर सेवा को और भी फैलावे। एक ही लहर, एक ही टाइम पर सब देशों में निमित्त बन जाये, ऐसा संगठन हो। अभी तक सेवा जो बिखरी हुई है, बाबा कहते हैं – इसकी एक माला बनाओ और वह माला अभी से वह कार्य करे। एक दो के संगठन से उन्हों में और उमंग आयेगा। ऐसे सेवा के प्रति इशारा देते, याद-प्यार देते विदाई दी और हम साकार वतन में आ गई।

ओमशान्ति।

a a a